



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय शिक्षा में स्व-विनियमित अधिगम का विकास : वैदिक काल से आधुनिक काल तक

ईशु सिंह

शोध छात्रा

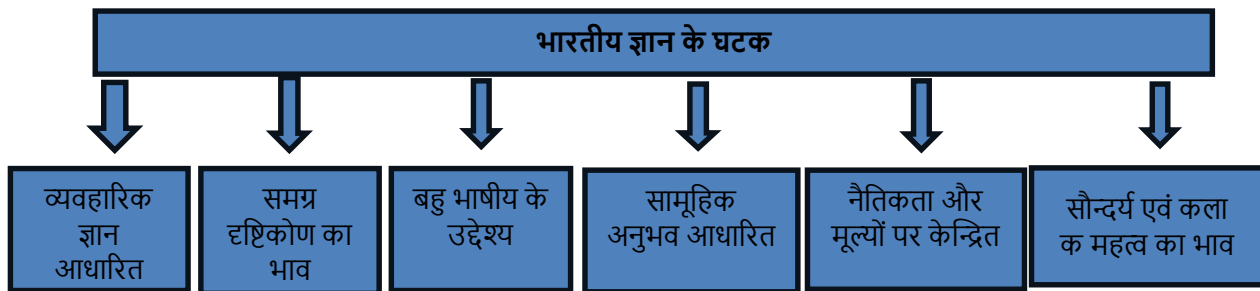
शिक्षाशास्त्र विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सार:- वैदिक कालीन शिक्षा में विद्यार्थी द्वारा स्व-नियंत्रण, आत्मानुशासन और स्वाध्याय पर विशेष ध्यान दिया जाता था वहीं आधुनिक स्व-विनियमित अधिगम में भी विद्यार्थी को आत्मनिर्भर, स्व-अनुशासित और आत्म प्रेरित बनाने का प्रयास किया जाता है जिससे कि विद्यार्थी स्वयं की अधिगम प्रक्रिया को नियंत्रित कर सकता है। इसके परिणाम स्वरूप यह स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है कि किस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली की अवधारणा स्व-विनियमित अधिगम से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। इस शोध पत्र में भारत की वैदिक शिक्षा प्रणाली, श्रवण-मनन-निदिध्यासन तथा स्वाध्याय अधिगम इत्यादि परम्पराओं का अध्ययन किया गया है, जिसमें यह स्पष्ट रूप से देखा गया कि इन अधिगम विधियों का मूल स्वरूप ही वर्तमान की स्व-विनियमित अधिगम का मूल तत्व है अर्थात् इसकी मूल संरचना ही भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित है। इस शोध पत्र में आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेश के महत्व का विश्लेषण किया गया है। वर्तमान समय में श्रवण-मनन-निदिध्यासन एवं अन्य भारतीय अधिगम विधियों को राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर भी इसका महत्व काफी बढ़ रहा है इस शोध पत्र के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं स्व-विनियमित अधिगम में समन्वय को सशक्त बनाने, विद्यार्थियों में आत्मानुशासन, निर्णय शक्ति, मानसिक संतुलन और नैतिक मूल्यों के विकास के महत्व को भी बताने का प्रयास किया गया है। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रभावी समावेशन की आवश्यकता को रेखांकित करता है, जिससे कि स्व-विनियमित अधिगम और अधिक समग्र और प्रभावपूर्ण हो सके।

मुख्य शब्द:- स्व-विनियमित अधिगम, वैदिक कालीन शिक्षण, आधुनिक शिक्षा

- I **प्रस्तावना:-** विभिन्न अनुशासनों जैसे की भूगोल में भारत एक राष्ट्र है, राजनीतिशास्त्र की भाषा में यह एक लोकतांत्रिक देश है, वहीं शिक्षाशास्त्र की भाषा में भारत एक समाज है। इसी प्रकार आधुनिक समय में शिक्षा के संदर्भ में लोकतांत्रिक भारत के अर्थ से तात्पर्य आधुनिक भारतीय समाज से है, परन्तु यहां यह विचारणीय होगा कि आधुनिक भारतीय समाज बनने में अनेक वर्षों की संस्कृति, शैक्षिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दर्शन, अर्थव्यवस्था इत्यादि सभी का योगदान रहा है। किसी राष्ट्र की शैक्षिक संरचना उसके दर्शन, संस्कृति, राजनैतिक और अर्थव्यवस्था पर निर्भर करती है और यह सभी समयानुसार परिवर्तित होते रहते हैं। वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक मुनष्य के जीवन में शिक्षा मात्र उपलब्धियों एवं उपाधियों से संबंधित न होकर वरन् मनुष्यों में ज्ञान का एक पुंज होती जो कि उनके सर्वोत्तम तथा सर्वांगीण विकास की भूमिका का निर्वहन करती है। यह ज्ञान मुख्यतः हमारे प्रकृति, समाज, अध्यात्मिक और आत्मानुशासन से जुड़ा होता है। वैदिक काल से ही भारतीय ज्ञान प्रणाली में दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, कला, प्रौद्योगिकी और जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित एक सर्वांगीण ज्ञान को मानव के लिए महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली में निम्न घटकों का सम्मिश्रण देखने को मिलता है।



II भारतीय पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के प्रमुख प्रकार:-

1. **दार्शनिक ज्ञान प्रणाली:-** भारतीय ज्ञान के स्वरूप में वेद, उपनिषद, षड्दर्शन इत्यादि दर्शनों की तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा एवं आचार मीमांसा के तत्व देखने को मिलते हैं। ऋग्वेद में गुरुकुल पद्धति, यजुर्वेद में धार्मिक रीतियों, सामवेद में संगीता की शिक्षा, उपनिषद में आध्यात्मिक और तत्वमीमांसा पर आधारित ग्रंथ, षड्दर्शन में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदांत सभी का ज्ञान सम्मिलित होता है।
2. **विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान प्रणाली:-** वैज्ञानिकता एवं तकनीकी पर आधारित शिक्षा वैदिक काल से ही भारतीय ज्ञान प्रणाली के शिक्षा के रूप में प्रदान की जा रही है। आर्यभट्ट का सूर्य सिद्धान्त, ब्रह्मगुप्त का ब्रह्मस्फुटिक, भास्कराचार्य का सिद्धान्त शिरोमणि, चरक की चरक संहिता आदि महान विभूतियों के योगदान विश्व भर में स्मरणीय है।
3. **बहु भाषीय ज्ञान प्रणाली:-** भारतीय ज्ञान प्रणाली हमेशा से ही बहु भाषीय आधारित शिक्षा प्रदान दिए जाने पर बल दिया जाता रहा है। जिसमें कि गुरुकुल में संस्कृत, बौद्ध काल में पाली, मुस्लिम काल में फारसी, अरबी इत्यादि इसके उदाहरण हैं।
4. **भारतीय ज्ञान प्रणाली में विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान:-** भारत में सौंदर्यशास्त्र, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र जैसे भिन्न प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान भी इसके विशेषता रही है। इसमें कुछ प्रमुख जैसे धर्मशास्त्र- मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, अर्थशास्त्र में चाणक्य का अर्थशास्त्र, नीति शास्त्र में विदुर नीति, विष्णु शर्मा की पंचतंत्र आज भी शिक्षा को सुशोभित करती है।
5. **योग एवं आध्यात्मिक ज्ञान:-** योग साधना ज्ञान पद्धति को विकसित करने श्रेय भारतीयों को जाता है। योग के जन्मदाता के रूप में आज प्रत्येक मनुष्य पतंजलि के नाम से परिचित है। वैदिक काल में मनुष्यों के जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्मानुभूति, ईश्वर की प्राप्ति या मोक्ष की प्राप्ति से था, बौद्ध काल में आध्यात्मिक से निर्वाण प्राप्ति से था, वहीं जैन धर्म में इसका अर्थ कैवल्य की प्राप्ति से था।

III **भारत की वैदिक ज्ञान प्रणाली:-** लगभग 2500-500 ई० पू० के आस पास भारत का वैदिक युग माना जाता है। उस समय की शिक्षा के स्वरूप में आध्यात्मिक या धार्मिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि विज्ञान, गणित, चिकित्सा, भाषा, दर्शन, योग, खगोलविज्ञान, नीतिशास्त्र सहित मनुष्य के चरित्र का निर्माण, नैतिकता, समाज सेवा की भावना का विकास अर्थात् मनुष्य में सर्वांगीण उन्नति करना था। इस प्रणाली में अध्यापक के व्यवहारिक ज्ञान, आत्म संयम, अनुशासन और समर्पण की भावना आदि गुणों को विद्यार्थी अनुकरण द्वारा सीखने का प्रयास किया जाता था। वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, वेदांग, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, नक्षत्रविद्या आदि वैदिक शिक्षा प्रणाली के प्रमुख स्रोत हैं।

वैदिक ज्ञान प्रणाली कि प्रमुख विशेषता:-

1. **गुरुकुल शिक्षा:-** इस शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी गृह से दूर शिक्षण संस्थाओं में रह करके शिक्षा प्राप्त करता था। जिसमें कि ज्ञान की प्राप्ति के साधन में व्याख्यान, स्वाध्याय, भिन्न महाकाव्यों का पठन आदि आते थे।
2. **योग और ध्यान शिक्षा प्रणाली:-** इसका प्रतिपादन पतंजलि द्वारा किया गया था जिन्होंने योग दर्शन में योग का महत्व वा प्रक्रिया, योग अष्टांग मार्ग आदि गुणों का विकास किया। इस शिक्षण विधि में विद्यार्थियों को योग एवं ध्यान के द्वारा उनके मानसिक और शारीरिक अनुशासन को स्थापित करता जाता था।
3. **आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली:-** संपूर्ण विश्व में भारत के चरक द्वारा चरक संहिता से आयुर्वेद चिकित्सा का विकास हुआ है। सुश्रुत संहिता भी इस काल की देन है।

4. **संवाद एवं प्रायोगिक शिक्षा:-** वैदिक काल में उपनिषदों द्वारा शिक्षा जगत में संवाद और प्रायोगिक शिक्षण विधियों का विकास किया गया है।
5. **श्रवण-मनन-निदिध्यासन विधि:-** वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली ज्ञान प्राप्त के लिए श्रवण मनन निदिध्यासन विधि का प्रयोग किया जाता था। जिसमें विद्यार्थियों को चिंतन करना मन में धारण करना ध्यान आदि गुणों का विकास करना होता है।

IV **आधुनिक शिक्षा प्रणाली:-** आधुनिक शिक्षा प्रणाली स्मृति, धारण और बोध तीनों पर आश्रित है। आधुनिक शिक्षा का स्तरीकरण मुख्यतः- कक्षा, वर्ग अथवा आयु पर वर्गीकृत किया गया है। आधुनिक शिक्षा में विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए शिक्षक, पुस्तक, विद्यालय पर निर्भरता ही नहीं वरन् प्रौद्योगिकी की भी अत्यधिक भागीदारी देखने को मिलती है। आधुनिक शिक्षा के कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :-

1. **विद्यार्थी आधारित शिक्षा:-** इस विचारधारा को सर्वप्रथम रूसो ने पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात की थी। उसके पश्चात जॉन डीवी ने इसका प्रसार किया। इस शिक्षा पद्धति में विद्यार्थी शिक्षण का केंद्र बिन्दु होता है। विद्यार्थियों की सक्षमता स्तर को ध्यान रखकर शिक्षण-अधिगम कार्य किया जाता है।
2. **मनोवैज्ञानिक केंद्र आधारित:-** इसमें विशेषतः व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता पर आधारित शिक्षा देने का प्रयास किया जाता है। इसके समर्थकों में पावलव, स्किनर, थार्नडाइक, कुर्ट लेविन जैसे मनोवैज्ञानिक उल्लेखनीय हैं।
3. **आई सी टी आधारित शिक्षा:-** यह आधुनिक शिक्षा के प्रमुख तत्त्वों जिसमें कि स्मार्ट कक्षा, ऑनलाइन अधिगम और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग करके शिक्षा प्रदान की जाता है। उदाहरण में जैसे कंप्यूटर, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस।
4. **व्यवसायिक केन्द्रित शिक्षा:-** इसका केंद्र बिन्दु व्यवसायिक पाठ्यक्रम, कौशल विकास द्वारा रोजगार हेतु विद्यार्थियों को तैयार करना है। जैसे कि निफ्ट में वस्तु व्यवसायिक शिक्षा, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में तकनीकी व्यवसायिक ज्ञान।

V **स्व-विनियमित अधिगम:-** स्व-विनियमित अधिगम पद्धति एक शिक्षा विधि या तकनीकी है जिसमें अधिगम कर्ता स्वतः- अपनी अधिगम की प्रक्रिया को नियंत्रित करता है। इसमें शिक्षार्थी अपने लक्ष्यों को निर्धारित, उनके प्राप्ति के लिए गतिविधियों को निर्धारित, किए गए कार्यों को स्व मूल्यांकित, सुधार और सुधारात्मक गतिविधियों को पुनः कार्यान्वित करता है, जब तक वह निर्देशित लक्ष्यों को प्राप्त न कर ले। इसमें आत्म अभिप्रेरणा का कार्य भी वह स्वयं करता है। इस अधिगम की प्रक्रिया को बैरी जे० जिम्मेरमैन द्वारा निम्न चरणों में विभाजित किया गया है:-

○ **पूर्व विचार चरण (Fore thought phase):-**

A. कार्य विश्लेषण

- लक्ष्यों का निर्धारण
- योजना की रणनीति

B. आत्म अभिप्रेरणा

- आत्म प्रभावकारिता
- आपेक्षित परिणाम
- कार्यों की रुचि
- लक्ष्योन्मुखीकरण

○ **प्रदर्शन चरण (Performance phase)-**

- आत्म नियंत्रण
- आत्मालोकन

○ आत्म चिन्तन/ आत्म निर्माण चरण (Self-reflection phase):-

- A. आत्म निर्णय सक्षमता
- स्व मूल्यांकन
- B. आत्म प्रतिक्रिया
- आत्मसंतुष्टि

उपरोक्त चरणों से हमें स्व-विनियमन के बारे में ज्ञात होता है कि सबसे पहले चरण में पूर्व योजना आधारित क्रियाएं होती हैं जिसमें कि लक्ष्यों का निर्धारण, रुचि, अपेक्षित परिणाम होता है। उसके पश्चात दूसरे चरण में स्व अधिगम के कार्य जिसमें कि स्व नियंत्रण व आत्मालोकन पर ध्यान दिया जाता है। अंतिम चरण में उन्होंने निष्पादित कार्य के मूल्यांकन, परिणाम व उनमें सुधार के बिंदुओं पर ध्यान देने की बात समझाई गई है। ये चरण तीन आयामों पर कार्य करता है:-

1. **संज्ञानात्मक आयाम**
 - अधिगम की रणनीतियां
 - समस्या समाधान क्षमता
 - तार्किक एवं विश्लेषण की क्षमता
2. **अभिप्रेरण आयाम**
 - आत्म अभिप्रेरणा
 - आत्म विश्लेषण
3. **अधिगम के प्रति आंतरिक इच्छा**
 - व्यवहारिक आयाम
 - आत्म निगरानी
 - आत्म निर्देशन
 - आत्म निर्माण

VI **शिक्षा में स्व-विनियमित अधिगम की भूमिका:-** आधुनिक शिक्षा प्रणाली में जैसे कि शिक्षा तकनीकी प्रतिमान में स्थानांतरित हो गई है अर्थात् यह स्व-विनियमित अधिगम की आधार शिला पर क्रियान्वयन होती है, जिसमें कि विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में उनको आत्मनिर्भर, आत्म अभिप्रेरित एवं आत्म निर्देशन इत्यादि कौशलों का विकास करना आवश्यक होता है। आधुनिक शिक्षा में स्व-विनियम अधिगम की भूमिका को निम्नलिखित बिंदुओं के अन्तर्गत रेखांकित किया जा सकता है:-

1. **विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण में स्व-विनियमित अधिगम:-** स्व-विनियमित अधिगम विद्यार्थियों को स्वयं की रुचि और उनके गति के अनुरूप सीखने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। यह उन्हें पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के समूह अधिगम के बजाए व्यक्तिगत शिक्षा के लिए सक्षम बनाने का कार्य करता है।
2. **समस्या समाधान कौशल में स्व-विनियमित अधिगम:-** स्व-विनियमित अधिगम विद्यार्थियों को तर्किक क्षमता, सृजनात्मक चिन्तन एवं समस्याओं का समाधान के लिए अभिप्रेरित करता है। यह विद्यार्थियों में आधुनिक शोध और शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार के लिए नितान्त आवश्यक पहलू है।
3. **डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा में स्व-विनियमित अधिगम:-** आज विद्यार्थियों के लिए अधिगम पुस्तिकीय ज्ञान, विद्यालय परिसर तक ही सीमित नहीं है, यह विभिन्न माध्यमों जिनमें ऑनलाइन प्लेटफार्म यथा कोर्सएरा(coursera), निपटेल(NPTEL), स्वयं(sawyam), गेमिफिकेशन(gamification) इत्यादि से भी दिया जाता है जो कि स्व-विनियमित अधिगम की अवधारणा पर कार्य करता है। जिसमें विद्यार्थी स्व प्रेरित होकर स्वयं की गति से कार्य करता है।
4. उपरोक्त स्व-विनियमित अधिगम के घटक, आयामों एवं आधुनिक शिक्षा की निर्भरता देख जा सकता है, जिसमें कि यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार स्व-विनियमित अधिगम वर्तमान में नए एवं महत्वपूर्ण आयाम के रूप में पोषित हो रहा है। परन्तु आगे के बिंदुओं द्वारा हम यह देखेंगे कि किस प्रकार स्व-विनियमित अधिगम खुद भारतीय वैदिक शिक्षण ज्ञान का ही एक संशोधित आयाम है।

VII भारतीय वैदिक ज्ञान प्रणाली में स्व विनियमन के लक्षण:-

वैदिक शिक्षा प्रणाली मनुष्यों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित करती थी तथा विनम्रता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और नैतिक मूल्यों बल दिया जाता था। इस ज्ञान प्रणाली के उपरोक्त प्रमुख अधिगम तत्वों द्वारा यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार स्व-विनियमन पुरा काल से ही शिक्षण कार्य को प्रभावित कर रही है जिनका वर्णन अग्रलिखित है:-

1. **वैदिक काल की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में:-** वैदिक काल में गुरुकुल में प्रदान की जाने वाली शिक्षा का मुख्य कार्य विद्यार्थी में आत्मानुशासन, स्वतंत्र अध्ययन और गुरु शिष्य परंपरा पर ध्यान दिया जाता था।
2. **श्रवण-मनन-निदिध्यासन विधि में:-** इस विधि का सर्वाधिक प्रयोग वैदिक काल, बौद्ध काल, जैनियों के समय किया जाता था, जो कि विद्यार्थियों में आत्म नियंत्रण, आत्म चिन्तन एवं आत्ममूल्यांकन द्वारा सम्पूर्ण होती थी।
3. **योग एवं ध्यान विधि में:-** भारतीय पारंपरिक शिक्षण में प्रमुख रूप से योग और ध्यान विधि राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी काफी लोकप्रियता प्राप्त कर रही है। योग में विद्यार्थियों को विभिन्न योग मुद्राओं का कौशल सिखाया जाता जिसमें आत्मानुशासन, आत्मावलोकन, मानसिक संतुलन आदि का विकास जाता था।
4. **स्वाध्याय विधि में:-** पूर्व कालीन भारतीय शिक्षण पद्धति छात्रों में स्वाध्याय के माध्यम से होती थी जिसमें प्रमुख रूप से उनके द्वारा वेदों, उपनिषद, पुराणों इत्यादि का अध्ययन स्व गति से करते एवं अधिगम का प्रयास।
5. **प्रायोगिक एवं संवाद विधि में:-** वैदिक ज्ञान की संवाद एवं प्रायोगिक विधि में विद्यार्थियों के ज्ञान व्यावहारिक उपयोग की अभिक्षमता परिलक्षित होती थी जिसमें विद्यार्थी का स्वयं के विवेक द्वारा कार्यो को पूरा करता था।
6. **वैदिक काल में स्व-विनियमन पर आधारित कुछ प्रमुख शिक्षण संस्थान:-** नालंदा विश्वविद्यालय (5वीं सदी ई.) में धर्मशास्त्र, व्याकरण, दर्शन, खगोलशास्त्र, तक्षशिला विश्वविद्यालय (600 ईसा पूर्व) में चिकित्सा, आयुर्वेद, गणित, तर्कशास्त्र, विक्रमशिला विश्वविद्यालय में तंत्र, योग और बौद्ध अध्ययन वल्लभी और ओदंतपुरी विश्वविद्यालय में राजनीति, ज्योतिष, व्याकरण जैसे शिक्षण संस्थान जो उस समय में ज्ञान के अर्जन के प्रमुख स्थान माने जाते थे, वो स्वयं भी स्व-विनियमित अधिगम के स्वरूप पर ही उच्च स्तर की शिक्षा द्वारा शोध और अधिगम के ज्ञानार्जन पर बल देते थे।

VIII स्व-विनियमित अधिगम में वैदिक ज्ञान प्रणाली:-

वैदिक शिक्षा प्रणाली ज्ञान एवं स्व-विनियमित अधिगम विधि के अर्थों, घटकों, विशेषताओं, आयामों के अध्ययन के पश्चात यह कहना कदापि गलत नहीं होगा कि उपरोक्त दोनों विधियां ही शिक्षा के समग्र विकास के स्वरूप पर केंद्रित है। इसमें पारंपरिक ज्ञान प्रणाली आत्मानुशासन, चिंतन, आत्म शिक्षा, मनःस्वाध्याय और अनुभवजन्य शिक्षण को सर्वाधिक महत्व देता है, जबकि स्व-विनियमित अधिगम की मूल संरचना भी इन्हीं अवधारणों को संग्रहीत किए हुए है। दोनों का ही कार्य विद्यार्थी को सीखने की स्वायत्तता प्रदान करने से है।

1. **स्व-विनियमित अधिगम का पूर्व विचार चरण एवं वैदिक शिक्षण:-** इस चरण में विद्यार्थी द्वारा लक्ष्यों का निर्धारण, रणनीति, कार्य विश्लेषण, अपेक्षित परिणाम, स्व अभिप्रेरणा, रुचि पर ध्यान दिया जाता है जो कि गुरुकुल प्रणाली के आत्म अनुशासन, स्वतंत्र अध्ययन इत्यादि का समृद्ध स्वरूप है।
2. **स्व-विनियमित अधिगम के प्रदर्शन चरण एवं वैदिक शिक्षण:-** इसमें विद्यार्थी स्वतः ही नियंत्रित लक्ष्यों की ओर निर्देशित एवं आत्मवलोकन कार्य करता है जो कि पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के योग ध्यान विधि से सम्बन्धित है। योग में मानसिक संतुलन, आत्मानुशासन, आत्म नियंत्रण के योग्य बनाया जाता जिससे वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।
3. **स्व-विनियमित अधिगम का आत्म चिन्तन चरण एवं वैदिक शिक्षण:-** इसमें विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्य की मूल्यांकन प्रक्रिया एवं उससे प्राप्त परिणाम की आत्मसंतुष्टि पर कार्य किया जाता है, पारंपरिक ज्ञान का चिंतन-मनन विधि ने चिन्तन, मनन एवं ध्यान द्वारा प्राप्त ज्ञान पर यह देखने का प्रयास किया जाता है कि जिन लक्ष्यों का निर्धारण किया गया था उनके प्राप्ति किस सीमा तक हो सकी है।
4. **समस्या समाधान, तार्किक क्षमता एवं वैदिक शिक्षण:-** विद्यार्थियों द्वारा निर्धारित लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए समस्या समाधान की सर्वोत्तम विधि का प्रयोग किया जाता है, जिसमें कि वह वैदिक गणित, तर्कशास्त्र, न्यायदर्शन जैसे विधियों को अपने सोच, कल्पना और समाधान का आधार बनाता है।
5. **स्व-विनियमित पर आधारित कुछ प्रमुख शिक्षण संस्थाओं:-** नालंदा, तक्षशिला जैसे शिक्षण संस्थान जो पारम्परिक ज्ञान का स्रोत माने जाता थे वह स्वयं भी स्व-विनियमित अधिगम के स्वरूप पर ही उच्च स्तर की शिक्षा द्वारा शोध और अधिगम के ज्ञानार्जन सतह पर बल प्रदान करते थे।

IX **वैदिक ज्ञान प्रणाली का आधुनिक शिक्षा एवं स्व-विनियमित अधिगम में महत्व:-**

शिक्षा के बदलते स्वरूप के आज आधुनिक शिक्षण गतिविधियों में स्व विनियमित अधिगम को अपनाया जा रहा है। यह अधिगम प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थियों के आत्मनिर्भरता, आत्मानुशासन, स्वाभिरप्रेरण के माध्यम से ज्ञानार्जन की क्षमता विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

1. **अनुभव आधारित और व्यावहारिक ज्ञान का स्रोत:-** विद्यार्थियों द्वारा अनुभव और व्यावहारिक ज्ञान का प्रयोग किया जाता है, जिसका मुख्य आधार ही पारम्परिक ज्ञान प्रणाली है। इस शिक्षण विधि द्वारा विद्यार्थियों में स्व-अधिगम की सक्षमता का विकास होता है, आधुनिक शिक्षा में पारम्परिक शिक्षा के व्यावहारिक स्वरूप का प्रयोग किया जाता है।
2. **आत्मनिर्भरता एवं कौशल विकास मे:-** स्वयं (SWAYAM), मूक (MOOC), गेमिफिकेशन (GAMIFICATION) आदि विभिन्न अधिगम के ऑनलाइन प्लेटफार्म द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा पूरा करने का अवसर मिलता है, जिसमें वह अपने सुविधानुसार अपने स्वतंत्रता से अध्ययन का कार्य करता है। वह शिक्षक या विद्यालय पर आश्रित न होकर आत्मनिर्भरता के कौशल का विकास करता है।
3. **समस्या-समाधान कौशल विकास मे:-** पारम्परिक ज्ञान जैसे कि वैदिक गणित से आज के विद्यालयों को गणित जैसी विषयों की समस्या को हल करने की एक कुशल तकनीकी का विकास हुआ है।
4. **नैतिकता एवं आचरण के मूल्यों का संवर्धन करने में:-** आत्म नियंत्रण, आत्मावलोकन, करुणा आदि की भावना का विकास ही गुरुकुल की शिक्षा के केंद्र बिन्दु होते थे, जो कि आज की आधुनिक शिक्षा में विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास करने के अत्यंत सहायक है।
5. **आत्म अभिप्रेरण, मानसिक संतुलन कौशल के विकास में:-** पारम्परिक शिक्षा की भांति आधुनिक शिक्षा में विद्यार्थियों में आत्म अभिप्रेरण के विकास हेतु उन्हें परामर्श दिया जाता है। उन्हें योग शिक्षा, शारीरिक शिक्षा द्वारा मानसिक संतुलन पर ध्यान देने एवं विकास के योगदान के रूप में पारम्परिक ज्ञान प्रणाली का महत्व राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी देखने को मिलता है।
6. **बहु भाषिक शिक्षा के विकास मे:-** भारतीय वैदिक, बौद्ध, जैन शिक्षा द्वारा यह देखने को मिलता है कि पारम्परिक शिक्षा में किस प्रकार बहु भाषिकता के सम्प्रत्यय का प्रयोग किया जाता था, आधुनिक शिक्षा में आज हिन्दी, अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं का अध्ययन एवं उन भाषाओं में अध्यापन किया जाना वाला प्रयास पारम्परिक ज्ञान प्रणाली की ही देन है।

- X **निष्कर्ष:-** शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, परिणाम स्वरूप बदलते सामाजिक परिवेश और भारतीय मूल्यों के मध्य समावेशन अत्यन्त आवश्यक है। समावेशन की प्रक्रिया में भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रत्येक काल का अपना एक प्रभावपूर्ण अस्तित्व रहा है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली, आधुनिकता के दौर में तभी अपने गति से चल सकती है, जब वह वैदिक ज्ञान प्रणाली के महत्व को भली भांति समझे और उसका समावेश करे। वैदिक काल में मानव की शिक्षा प्रक्रिया सर्वांगीण विकास के आधार पर संपन्न होती थी जिसमें कि विभिन्न दर्शनों, महाकाव्य, स्मृतियों, धर्मग्रंथों, व्याकरण, ज्योतिष ज्ञान के साथ-साथ महान विभूतियों जैसे चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, आदि के विचारों, आदर्शों का आधुनिक शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक शिक्षा एवं स्व-विनियमित अधिगम में निरंतरता एवं सफलता प्राप्त करने के लिए पतंजलि का योग दर्शन, स्वाध्याय और तर्क विधि, उपनिषद् की संवाद विधि, सांख्य दर्शन का पंच तन्मात्रा, श्रवण-मनन-निदिध्यासन विधि आदि की अभीष्ट छाप देखने को मिलती है। आधुनिकता का अर्थ कदापि बदलाव मात्र से न होकर अपितु एक संस्कृति में निहित ज्ञान, परम्परा को तात्कालिक आवश्यकताओं के साथ अभ्युत्थान से सम्बन्धित होता है जो कि भारत की वैदिक शिक्षा प्रणाली के सहयोग एवं उनके सिद्धांतों के प्रयोग से ही संभव है। उपनिषद् में यह एक उक्ति है कि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी स्वयं दृष्टिहीन हो तो वह लक्ष्यों को कैसे प्राप्त कर सकता है। उसी प्रकार शिक्षा में आधुनिकता के लिए उसे एक सुदृढ दृष्टिपात की आवश्यकता है जो उसे वैदिक शिक्षा प्रणाली के सिद्धांतों, विशेषताओं, विधियों द्वारा सहायक एवं लाभप्रद बना सके है।

References

1. Adam, N. L., Alzahri, F. B., Cik Soh, S., Abu Bakar, N., & Mohamad Kamal, N. A. (2017). Self-regulated learning and online learning: a systematic review. In Advances in Visual Informatics: 5th International Visual Informatics Conference, IVIC 2017, Bangi, Malaysia, November 28–30, 2017, Proceedings 5 (pp. 143-154). Springer International Publishing.
2. Amoozegar, A., Abdelmagid, M., & Anjum, T. (2024). Course satisfaction and perceived learning among distance learners in Malaysian research universities: The impact of motivation, self-efficacy,

- self-regulated learning, and instructor immediacy behaviour. *Open Learning: The Journal of Open, Distance and e-Learning*, 39(4), 387-413.
3. Clark, I. (2012). Formative assessment: Assessment is for self-regulated learning. *Educational psychology review*, 24, 205-249.
 4. Gupta, B. (2021). An introduction to Indian philosophy. In *Routledge eBooks*.
<https://doi.org/10.4324/9780429345210>
 5. Govender, N. (2012). Educational implications of applying the complexity approach to Indigenous Knowledge Systems (IKS). *Alternation*, 19(2), 112-137.
 6. Jaiswal, A., & Arun, C. J. (2021). Potential of Artificial Intelligence for transformation of the education system in India. *International Journal of Education and Development using Information and Communication Technology*, 17(1), 142-158.
 7. Khan, S., & Sharma, M. (2024). An overview on Indian knowledge System. *Integrated Journal for Research in Arts and Humanities*, 4(4), 42–46. <https://doi.org/10.55544/ijrah.4.4.7>
 8. Lee, M., Lee, S. Y., Kim, J. E., & Lee, H. J. (2023). Domain-specific self-regulated learning interventions for elementary school students. *Learning and Instruction*, 88, 101810. <https://doi.org/10.1016/j.learninstruc.2023.101810>
 9. Mandavkar, P. (2023). Indian Knowledge System (IKS). *SSRN Electronic Journal*. <https://doi.org/10.2139/ssrn.4589986>
 10. Mishra, N., & Aithal, P. S. (2023). Ancient Indian Education: It's relevance and importance in the modern education system. *SSRN Electronic Journal*. <https://doi.org/10.2139/ssrn.4540674>.
 11. M, M. K., Aithal, P. S., & S, S. K. R. (2023). Literature Review on Indian Ancient University in imparting Holistic and Multidisciplinary: To Create Indian Knowledge System (IKS). *Zenodo (CERN European Organization for Nuclear Research)*. <https://doi.org/10.5281/zenodo.7847266>
 12. Pelikan, E. R., Lüftenegger, M., Holzer, J., Korlat, S., Spiel, C., & Schober, B. (2021). Learning during COVID-19: the role of self-regulated learning, motivation, and procrastination for perceived competence. *Zeitschrift Für Erziehungswissenschaft*, 24(2), 393–418. <https://doi.org/10.1007/s11618-021-01002-x>
 13. Rao, S. S. (2006). Indigenous knowledge organization: An Indian scenario. *International Journal of Information Management*, 26(3), 224–233. <https://doi.org/10.1016/j.ijinfomgt.2006.02.003>
 14. Zimmerman, B. J. (2002). Becoming a Self-Regulated Learner: An Overview. *Theory Into Practice*, 41(2), 64–70. https://doi.org/10.1207/s15430421tip4102_2
 15. Zimmerman, B. J. (1990). Self-Regulated Learning and Academic Achievement: An Overview. *Educational Psychologist*, 25(1), 3–17. https://doi.org/10.1207/s15326985ep2501_2